देव प्रतिष्ठा विधि

श्रीधर शास्त्री, महामंत्री
पण्डित परिषद्, प्रयाग

शास्त्री प्रकाशन, प्रयाग
२०२२ १८९ बहादुरगंज, इलाहाबाद मूल्य : रु0२५

।।अनुक्रमणिका।।

- शान्ति पाठ
- मंगल श्लोक पाठ
- प्रतिज्ञा संकल्प
- गौरी-गणपति पूजन
- प्रायश्चित्त दान
- कलश स्थापन
- वेदियों का पूजन
- जलाधिवास
- कंकण बंधन
- अन्नाधिवास
- देवस्नान
- षोडशोपचार पूजन
- रथ यात्रा
- शिवपार्वती विवाह
- शय्याधिवास
- शिखर कलश पूजन
- मंदिर-प्रासाद पूजन
- मूर्तिस्थापन–स्थलपूजन
- मूर्ति स्थापन
- प्रतिष्ठा
- अग्निस्थापन-हवन
- पूर्णाहुति-अभिषेक आदि

॥ प्रतिष्ठा-पूजन प्रारम्भ ॥

- यजमान प्रातःकाल नित्य-नैमित्तिक कार्यों से निवृत्त होकर रेशमी या पीली धोती-दुपट्टा-जनेऊ पहन कर, पाँव में रंग लगाकर पूजन के लिए पूजास्थल पर आये।
- यजमान पत्नी भी शुद्ध वस्त्र-उपवस्त्र पहन कर सौभाग्यसूचक मांगलिक अलंकरण धारण कर पूजन के लिए पति के समीप दाहिनी ओर बैठे।
- यजमान [पत्नी सहित] हवन वेदी के पश्चिम पूर्व मुख शुद्ध आसन पर बैठे।
- पत्नी यजमान की दाहिनी ओर रहेगी। • दोनों की गाँठ जोड़ दी जाय।
- ब्राह्मण उत्तर मुख बैठे। • पूजन प्रारम्भ करे—
- कुशा या आम्र पल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़कें। • मन्त्र पढ़ें

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

- तीन बार आचमन करें—

॥ ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नम ॥

- हाथ धो लें–

॥ ओम ऋषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

- पवित्री (पैंती) पहने। • निम्न मंत्र पढ़ता रहे–

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने यत् तच्छकेयम्।

- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर स्वस्ति वाचन करें–

।। हरिः ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीता स उद्‌भिदः। देवानो यथा सदमिद्‌वृधे असत्र प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे । देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयतां देवाना ꣳ राति रभि नो निवर्तताम्। देवाना ꣳ सख्यमुपसे दिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीव से। तान् पूर्वया निविदा हू महे वयं भगं मित्र मदितिं दक्ष मस्रि धम्। अर्यमणं वरुण ꣳ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत। तन्नो वातो मयो भु वातु भेषजं तन्माता

पृथिवी तत् पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस् तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व मव से हू महे वयम्। पूषानो यथा वेद सा मसद् वृधे रक्षिता पायु रदब्धः स्वस्तये। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः॥ आदितिर् द्यौ रदितिरन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम् ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः ॥ पशुभ्यः ॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥

ओम शान्तिः। शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥

- हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दें।
- दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

।।ओमं सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्वरधर देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः ॥

तदेव लग्नम् सुदिनं तदेव, तारावलं चन्द्रवलं तदेव,

विद्यावलं दैववलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि युगस्मरामि ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्री विजया भूतिर् ध्रुवा नीति मतिर्मम ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम।

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

उमामहेश्वराभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।

इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः।

स्थानदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन् महागणाधिपतये नमः ॥

- हाथ का अक्षत-पुष्प पृथिवी पर छोड़ दें।
- कुश-जल-अक्षत-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करें—

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे-वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूदीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम सवत्सरे यथायने सूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्र यथाराशि स्थिते सूर्ये यथा-यथाराशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम् एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुःस्थानगत ग्रहजन्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थम्-उत्पन्न उत्पत्स्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सतता रोग्यता वाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम्-च-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थम्-च-धन-धान्य-पुत्रपौत्रादि अनवच्छिन्न सत्संगतिलाभार्थम् शत्रुपराजय-बहुकीर्त्यादि-अनेकानेक-अभ्युदय फल प्राप्त्यर्थम् यथाकालाधिवासन पक्षेण—

१. सप्रासाद सवृष शिवादि पंचायतन देवानां स्थिर प्रतिष्ठा सहित मचल लिंग प्रतिष्ठां करिष्ये।

२. अनयोः राधाकृष्ण मूर्त्योः देवकला सान्निध्यार्थम् सप्रासाद श्रीकृष्ण राधिका मूर्त्योः प्रतिष्ठां करिष्ये।

३. आसु श्री रामचन्द्र जानकी लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-मारुति मूर्त्तिषु देवकला सान्निध्यार्थम् श्रीराम चन्द्रादिमूर्तीनां प्रतिष्ठां करिष्ये।

४. आसु लक्ष्मीनारायण-आदि मूर्त्तिषु देवकलासान्निध्यार्थम् लक्ष्मीनारायणादि प्रतिष्ठां करिष्ये।

५. आसु अमुक-अमुक मूर्त्तिषु देवकलासान्निध्यार्थम् अमुक मूर्तीनां चर प्रतिष्ठां [स्थिर प्रतिष्ठाम्] यथाकाले करिष्ये।

तदंगत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं-मातृकादि पूजनं-ग्रहपूजनं-नांदीश्राद्धादिकं तथा चान्यान्य देवानां पूजनं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम् गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये ॥

- संकल्प पढ़कर हाथ का अक्षत-पुष्प-कुशा आदि सामने भूमि पर छोड़ दें।
- इसके बाद [वेदी पूजन पद्धति से] गौरी-गणपति की पूजा करें।

टिप्पणी — • १ से ५ तक जिस देवता की मूर्ति स्थापित करनी हो प्रतिज्ञा संकल्प में उसे पढ़ें, शेष छोड़ दें।

- पाँचवे संकल्प में [आसु अमुक-अमुक] लिखा गया है वहाँ पर जिस देव की प्रतिष्ठा हो उसका नाम जोड़ ले।
- चर प्रतिष्ठा स्थिर प्रतिष्ठा—में जैसी प्रतिष्ठा हो—एक पढ़ें।

॥ प्रायश्चित्तदान ॥

- गौरी-गणेश की पूजा के बाद प्रायश्चित दान करें।
- यजमान कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहम् करिष्यमाण [अमुक] मूर्त्तिप्रतिष्ठा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थम् मत् सकल पातक निवृत्त्यर्थम् च शरीरशुद्ध्यर्थम् प्रायश्चित्तं करिष्ये ॥

- हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे —
- फूल लेकर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे—

॥ ओमृ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्। विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ॥ लक्ष्मीकान्तं कमलयननं योगिभिर् ध्यान गम्यम्। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नायम् ॥

॥ गोदान करें ॥

- यजमान कम से कम तीन गोदान करें।
- कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर प्रथम गोदान संकल्प पढ़ें—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं करिष्यमाण [अमुक] देव प्रतिष्ठा - अधिकार सिद्ध्यर्थम् सर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विहितमिदं यथाशक्ति गोवृष निष्क्रयीभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

- संकल्प कर कुश-अक्षत-द्रव्य ब्राह्मण को दे दे।
- ब्राह्मण लेकर कहे— **॥ ओमृ स्वस्ति ॥** • इसी तरह २ गोदान और करें—ब्राह्मणों को दे।
- हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

॥ अनेन श्री पापामहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम ॥

टिप्पणी ● कुछ लोग भगवान् की प्रार्थना के साथ-साथ शालिगराम की पूजा भी करते हैं।

● **इसके बाद [वेदीपूजन पद्धति से] निम्न पीठों की पूजा करें**

१. कलश स्थापन	२. पुण्याह वाचन	३. तिलक-अभिषेक
४. षोडशमातृका पूजन	५. सप्तस्थल मातृका पूजन	६. घृतमातृका पूजन
७. आयुष्यमंत्र जप	८. नांदीमुखश्राद्ध	९. रक्षा विधान
१०. रक्षा सूत्र बंधन	११. पंचगव्यकरण	१२. इन्द्रध्वज पूजन
१३. वास्तुपीठ पूजन	१४. क्षेत्रपाल पूजन	१५. ६४ योगिनी पूजन
१६. अग्निस्थापन पूजन	१७. आचार्यवरण	१८. नवग्रह पूजन
१९. अधिदेवतापूजन	२०. प्रत्यधिदेवता पूजन	२१. पंचलोक पूजन
२२. दशदिक्पाल पूजन	२३. सर्वतोभद्र अथवा लिंगतोभद्र पूजन	
२४. सुवर्णमूर्तिस्थापन पूजन		

● **''इसके बाद जलाधिवास करें''**

१. कुल लोग गौरी-गणपति का पूजन कर जलाधिवास-अन्नाधिवास करते हैं, बाद में वेदियों की पूजा करते हैं।

२. जलाधिवास-अन्नाधिवास १ रात, १ पहर अथवा गोदोहन मात्र [गौ को दुहने में जो समय लगता है] समय तक होता है, अपनी सुविधानुसार करना चाहिए।

॥ जलाधिवास ॥

● यजमान (पत्नी सहित) जलाधिवास स्थल पर आकर पूर्व मुख बैठे।
[जलाधिवास हवन वेदी के उत्तर करना चाहिए]

● यजमान अपने सामने किसी चौकी-पीढ़ा अथवा लाल-पीला नया शुद्ध वस्त्र बिछाकर उस पर सभी नई मूर्तियों को रख ले। [मूर्तियों का मुख पश्चिम या उत्तर की ओर रहे]।

● यजमान आचमन-प्राणायाम करे। फूल लेकर हाथ जोड़े। ब्राह्मणगण शान्ति पाठ करे–

॥ ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥
ओम् शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः ॥

- यजमान कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर संकल्प करें—

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ [अमुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहं करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि आसां मूर्त्तीनां देवता योग्यताधिष्ठान सिद्ध्यर्थम् जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥

- संकल्प पढ़कर हाथ का जल-अक्षत आदि सामने भूमि पर छोड़ दे।
- मूर्तियों को कुशा से पोंछ दे। पोंछ कर कुशा ईशान कोण में फेंक दे।
- घी में शहद मिलाकर सभी मूर्तियों में हलका-सा लेप कर दे।
- मूर्तियों में कहीं कोई छिद्र आदि हो तो घी-शहद से उसे बन्द कर दे।
- गंगा मिट्टी या किसी पवित्र नदी-तालाब की मिट्टी मूर्तियों में लगा दे।

।।ओम् सत् संस्काराय देवानां मलस्य परिशुद्धये। मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टि हेतवे।।

- गोबर-गोमूत्र-दूध- हवन का भस्म क्रमशः अलग-अलग मूर्तियों में लगा दे।

गोबर - १	गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धिकारकैः। गोमयैः स्नापयाम्येव देव संस्कार सिद्धये ॥
गोमूत्र - २	सुरभेर्गात्र सम्भूतैः पावनैः शुभकारकैः । गोमूत्रैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मल शुद्धये ॥
दूध - ३	गोस्तनेभ्यः समुत्पन्नैः पयोभिर्निर्मलैः शुभैः । स्नापयामि देवांस्तान् प्रतिष्ठा शुभहेतवे ॥
भस्म - ४	यथा वह्निस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत् । तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विधास्यति ॥

- गंगा जल अथवा शुद्ध तीर्थ नदी तालाब का जल चढ़ा दें—

॥ ओम गंगादि सलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदक समन्वितैः। स्नापयामि देवाँस्तान् सुणादि सुशोभितान् ॥

॥ कंकण बंधन ॥

- आचार्य के हाथ से नाप कर सफेद ऊन का सूत लेकर मूर्तियों के दाहिने हाथ (देवी के बाएं हाथ) में बाँध दे। [शिवलिंग में लपेट दें] मन्त्र पढ़ें—

॥ ओम् रक्षोहणम् वलगहनं वैष्णवी मिदमहं तं वलग मुत् किरामि।

यं मे निष्ट्र्यो यम मात्यो निचखाने दमहं तं वलग मुत् किरामि।
यं मे समानो यम समानो निचखाने दमहं तं वलग मुत् किरामि।
यं मे सवन्धुर्यम सबन्धु निंचखाने दमहं तं वलग मुत् किरामि।
यं मे सजातो यम सजातो निंचखानोत् कृत्यां किरामि ॥

- वड़े पात्रों में [जिसमें मूर्त्तियों को रखने पर मूर्तियाँ जल से ढंक जाय] शुद्ध जल भर दें।
- जल में पंचगव्य-हिरण्य-दूर्वा-यव-पीपल-पलाश का पत्र छोड़ दें।
- फूल लेकर प्रार्थना करें—

॥ ओम् जलाधि वासितो देवो मम भाग्योदयं कुरु। त्वदधिष्ठान संयोग्यं त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर ॥

- फूल जल-पात्र में छोड़ दें।
- मूर्तियों में कुशा तथा नवीन लाल वस्त्र लपेट दें। मन्त्र पढ़ें—

॥ ओम् देवानां रक्षणार्थाय रक्त सूत्रं कुशैर्युतम्। तद्वै प्रतिसराख्यम् च वध्नामि सुरहेतवे ॥

- कुश तथा रक्त वस्त्र लपेटकर मूर्तियों को जल पात्र में अधिवास करा दें। मन्त्र पढ़ें—

॥ओम् अवते हेडो वरुण नमोभि रवयज्ञे भिरीमहे हविर्भिः।
क्षयं नास्मभ्य मसुर प्रचेतो राजन्ने ना ॐ सि शिश्रयः कृतानि ॥
उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ॐ श्रथाय।
अथावय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम् ॥

- मूर्तियों को जल में अधिवास कराने के बाद फूल लेकर प्रार्थना करें—

॥ओम प्रतिमासु कलानां च सिद्ध्यर्थम् रक्षणाय जगत् प्रभो।
जलैशानां रक्ष भो देव मत्तोऽप्सु समधिष्ठताम् ॥
नमस्तेऽर्चे सुरेशानि प्रणीते विश्वकर्मणा।
प्रभाविता शेष जगद्धात्रे इह तुभ्यं नमो नमः ॥
त्वयि सम्पूजयामीशं नारायण मनामयम्। रहिता शेषदोषस्त्व मृद्धयुक्ता सदा भव ॥
सर्वसत्यमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्। त्वमेवालम् करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः ॥

- फूल मूर्तियों पर छोड़ दें।

- मूर्तियों से सम्बद्ध सूक्त तथा शान्ति सूक्त का पाठ करें।

॥ अन्नाधिवास ॥

- यजमान [पत्नी सहित] अन्नाधिवास स्थल पर पूर्व मुख वैठे।
- आचमन-प्राणायाम कर ले। पवित्री पहन लें।
- अक्षत-पुष्प लेकर शान्ति पाठ करें—

॥ ओमद्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

॥ ओम शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु॥ सर्वारिष्ट शान्तिरस्तु ॥

- हाथ का अक्षत फूल सामने पृथ्वी पर छोड़ दें।
- कुश-अक्षत जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें—

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ..गोत्रः नामाऽहं मम गृहे प्रचुरधनधान्य पुत्र पौत्रादि सुख सम्पत्ति-आदि निवासार्यम आसां मूर्तीनां देवता योग्यताधिष्ठान सिद्ध्यर्थञ्च धान्याधिवासं करिष्ये॥

- संकल्प पढ़कर हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे।
- अधिवास स्थल को गोबर से लीप कर [यदि पहले से लीपी है तो जल छिड़क कर] शुद्ध करे।
- गोवर से लिपी हुई भूमि पर धान्य [अन्न] फैला दे।
- धान्य के ऊपर शुद्ध-महीन नया वस्त्र बिछा दे। उठकर जलाधिवास स्थल पर जाय।
- पूर्व मुख वैठकर—आचमन-प्राणायाम करे।
- फूल लेकर जल में स्थित देवों की प्रार्थना करें—

॥१॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस् त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदा नव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा।

॥२॥ ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश समुत्तिष्ठ सुरेश्वर। उत्तिष्ठ जगदाधार त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।

॥३॥ ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां महाशय। जलाधिवासन विधिं त्यक्त्वा स्वीकुरु हि मण्डपम् ॥

- फूल जल पात्र स्थित मूर्तियों पर चढ़ा दे।
- क्रमशः १-१ मूर्ति जल पात्र से निकाले, शुद्ध वस्त्र से पोंछ कर जल सुखा दे। किसी पात्र में रखता जाय। सभी मूर्तियों को उठा कर शंख-भेरी-मृदंग-मंगल गीत आदि के साथ अन्नाधिवास के स्थान पर

आए और मूर्तियों को पश्चिम मुख रखे :

- स्वयं यजमान पूर्व मुख बैठ जाय।
- धान्य के ऊपर जो वस्त्र बिछाया है उस पर १ कुशा फैला दे।
- उसी धान्य-वस्त्र-कुश के ऊपर १-१ मूर्ति को अलग-अलग रख दे। मन्त्र पढ़ें–

॥ ओम् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

- मूर्तियों के ऊपर फिर एक कपड़ा फैला दे।
- कपड़े के ऊपर धान्य [अन्न] फैला दे। मूर्तियां बन्द हो जांय [परिवार सहित यह अन्न फैलाना चाहिए]।
- अन्न फैला कर उसके ऊपर कुशा-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दें।

[कुछ लोग षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजा करते हैं]

- देव सम्बन्धित सूक्त पाठ–शान्ति पाठ–मंगलगान करे।

॥ देवस्नान प्रयोग ॥

- यजमान अन्नाधिवास स्थल पर पूर्व मुख बैठें।
- आचमन-प्राणायाम करें। • फूल लेकर प्रार्थना करें।

॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदा नव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा।
स्वागतं देव देवेश विश्वरूप नमोऽस्तुते।
शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्वताम् ॥

देवी मूर्ति में–स्वागतं देव देवेशि विश्वरूपे नमोऽस्तुते।

- फूल मूर्तियों पर छोड़ दें। मूर्तियों को अन्न से बाहर निकाले।
- मूर्तियों को स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें। शुद्ध जल से स्नान करा दे –

॥ शुद्धेन वारिणा देवं सकलं वाञ्छित प्रदम् ॥ स्नापयामि सुरेशान मैश्वर्याभि वृद्धये ॥

- शंख-भेरी-मृदंग-मंगलगीत के साथ मूर्तियों को अन्नाधिवास स्थल से उठाकर अलग स्नान मंडप में रखे।

- मूर्त्तियों को पश्चिम मुख स्नान स्थल पर रखना चाहिए।
- यजमान मूर्त्ति के सामने पूर्व मुख बैठे। आचमन-प्राणायाम कर ले।
- कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

॥ अद्य शुभ पुण्य तिथौ...गोत्रः...नामाऽहं आसु मूर्तिषु देव साधिष्ठान योग्यता सिद्ध्यर्थम् नाना द्रव्योदककलशैः अर्चाशुद्धि स्नपनं करिष्ये ॥

- हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने पृथिवी पर छोड़ दें।
- एक पात्र में गेहूँ, जव, शालि (चावल), बेल-आँवला का चूर्ण मिलाकर मूर्त्तियों में हलका सा लेप कर दे।

॥ शमीमसूर गोधूम यव चूर्णैस्तथा शुभैः। उद्वर्तनं करिष्यामि शालिभिर्विल्व चूर्ण कैः ॥

- एक पात्र में कस्तूरी-केशर-कुंकुम-कपूर-जटामासी-चंदन मिलाकर लेप बनाकर मूर्त्तियों में लगा दें।

॥ कस्तूरिकाभिः कुंकुमश्चैव कर्पू रैश्चन्दनैः शुभैः। जटामासीभिस्तु तं देव मीदृशैर्यक्ष्म कर्दमैः॥
॥ अनुलिम्पामि देवेशं सदा ह्यमर वल्लभम् । सर्वविघ्नहरं शान्तं सर्वकल्मष नाशनम्॥

- मूर्त्तियों में सुगन्धित तेल लगा दें।

॥ ओम् तिलपिष्टैः पेषितैस्तैर् गन्धपुष्प समन्वितैः। सुगन्धि तैलैः सम्मार्ज्मि बहुप्रीतिकरं सुखम् ॥

- एक पात्र में घी-शहद मिलाकर सोने या चाँदी की सलाई (सींक) से मूर्त्तियों में नेत्र बना दे। [नेत्र बनाते समय मूर्त्ति के चारों ओर परदा कर दे कोई देखे नहीं।]

॥ ओम् देवस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठु तेजोऽभिवर्धये। द्वि चक्षुषोश्च निर्माणं करोमि स्वात्म सिद्धये ॥

- नेत्रों में पुतली बना दे।

॥ ओम् सौम्यरूपस्य सिद्ध्यर्थ मस्ति यक्ष्म पुट द्वयम् । ऊर्ध्वाधस्तु पृथग्भूतं कल्पयामि सुखाप्तये ॥

- नेत्रों में अंजन लगा दें।

॥ दिव्याञ्जनं मधुघृतं रजतस्य शुभान्वितम् । दास्यामि सौम्य दृष्ट्यर्थम् सुवर्णस्य शलाकया ॥

- मूर्ति के सामने एक बड़ा पात्र रखे [जिसमें लगभग २ किलो जल आ जाय]।
- इस पात्र में शुद्ध जल भर दे। कलश में लाल रोड़ी से स्वास्तिक बना दे। रक्षा सूत्र बांध दे।
- यजमान फूल लेकर पात्र जल में तीर्थों का आवाहन करे—

॥ओम् काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्य योध्या मधोः पुरी। शालिग्रामं सगोकर्णम् नर्मदा च सरस्वती।
झषारुढ़ा सरोजाक्षी पद्यहस्ता शशिप्रभा। आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पाप प्रणाशिनी ॥
नीलोत्पल दलश्यामा पद्यहस्ताम्बु जेक्षणा। आयातु यमुना देवी कूर्मयान स्थिता सदा ॥
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा। चर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा ॥
जम्बुका च शतद्रुश्च कालिका सुप्रभा तथा। वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥
गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त्तमार्जनी। कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी ॥
विटंका प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता। करतोया वेत्रवती वेदिका वेणुका च या ॥
आत्रेय गंगा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या। प्लावती शवित्रासा कल्माषा संशिनी तथा ॥
वशिष्ठा च ऊपापा च सिन्धु वत्यारूणी तथा। ताम्रा च त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनीपरा ॥
तैलिकाह्नी च पारा च दुन्दुभिर्नकुली तथा। नीलगन्धा च बोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा ॥
अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा। आषाढ़िं डिण्डिमारत्नं भारभूतं वलाकुलम् ॥
हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यम केश्वरम्। श्री पर्वत समाख्यातं जलेश्वर मतः परम् ॥
आम्नात केश्वरं चैव महाकालं तथैव च। केदार मुत्तमं गुह्यं महाभैरव मेव च ॥

गयां चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा। विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीम मष्टकम्॥
वस्त्रापदं रूद्र कोटिम विमुक्तं महावलम्। गोकर्णम् भद्रकर्णम् च माहेशं स्थानमुत्तमम् ॥
छागलाह्वं द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम्। कालञ्जर वनं चैव देवदारुवनं तथा ॥
शंकुकर्णम् तथैवेह स्थलेश्वर मतः परम्। गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ॥
एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणिसर्वशः। तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥

- फूल पात्र जल में छोड़ दें। दूसरा फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें।

॥ ओम् कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठताः। शिवः स्वयं त्वमासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्त्तुमीहे जलोद्भव। सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

क्षेम कर्त्ता, पुष्टि कर्त्ता, वर दो भव ॥

- फूल पात्र जल में छोड़ दें। जल की पूजा कर दे
  ॥ ओम् जलेऽस्मिन् वरुणाय नमः ॥—यह मंत्र पढ़ता रहे।
- इस पूजित जल को शान्ति जल कहा जाता है। इसे एक ओर संभाल कर रख लें। इसी से मूर्तियों को नहलाया जाता है।
- मूर्तियों को नाना प्रकार के द्रव्यों से नहलाया जाता है, सभी द्रव्यों में इस शान्ति जल को मिला लिया जाता है।

॥ नाना द्रव्य कलश जल स्नान विधि ॥

- सर्वप्रथम शान्ति जल को एक अन्य पात्र में थोड़ा सा ले लें और कुशा या आम्र पल्लव से मूर्तियों पर छिड़कें। मन्त्र—

॥१॥ ओम् गंगादि सलिलैर्दिव्यैस् तीर्थोदक समन्वितैः। स्नापयामि देवेशं तं महाशान्ति करं परम् ॥

॥२॥ देव देव परं शान्तं विश्वस्या घौघ नाशनम्। शुद्धावारिस्थ कुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये ॥

॥३॥ अनेन वारिणा युष्मान् सालङ्कृत विभूषितान्। स्नापयामि देवाँस्तान् सुरगणादि सुशोभितान् ॥

॥४॥ नमो हिरण्य गर्भाय हिरण्य कवचाय च। नमो ब्रह्म स्वरूपाय स्नापयामि शुभैर्जलैः ॥

॥५॥ पवित्रवारिभिः शुद्धैः शीतलैः सुमनोहरैः। एवं भूतैर्जलैर्देव स्नापयामि सुरार्चितम् ॥

- इसके बाद एक पात्र में सप्तमृतिका [नदी-तालाब, चौराहा, गोशाला, रथ, हाथीशाला, वाल्मीकि (विमौर) घोड़ा बाँधने के स्थान की मिट्टी] रख ले तथा उसमें थोड़ा सा शान्ति जल लें। उस सप्तमृत्तिका युक्त जल को मूर्तियों पर छिड़के।

  ॥ ओम् सत्संस्काराय देवानां मलस्य परि शुद्धये। मृतस्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टिहेवते ॥
- एक पात्र में पाँच वृक्ष [जामुन, सेमर, खिरैटी, बैर, मौलश्री] की छाल धोकर जल ले, उसमें शान्ति जल मिला ले। मूर्तियों पर छिड़कें—

  ॥ ओम् यज्ञियवृक्षत्वक् काषायैर् निर्मलैः परिशोधितैः। उष्णैर्मल हरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये ॥

टिप्पणी—[द्रव्य कलश जलों से मूर्तियों को स्नान कराने के बाद कलश का जल सँभाल कर रखें। यह मंदिर तथा शिखर कलश पर भी छिड़का जाता है।

- एक पात्र में पंचगव्य [गोबर गोमूत्र, गोदधि, गोदूध, गोघृत] मिलाकर लें, थोड़ा सा शान्ति जल मिला लें, मूर्ति पर छिड़कें।

॥ ओम् गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पिः समन्वितैः। पंचगव्यैः स्नापयामि त्वं देवं सर्वार्थसाधकम् ॥

- एक पात्र में दही-घी-शहद तथा शान्ति जल लेकर स्नान कराए–

॥ओम सुमंगलैर्मिष्टयुतैः दधिभिश्चन्द्रकान्तिभिः। स्नापयामि तं देवं शुभदं भय विनाशनम् ॥

॥ओम् सुमिष्टैर्गोसमुद्भूतैः स्वच्छैः पुष्टि करैवरैः। घृतैर्देवं स्नापयाम्यत्र सुतेजस्कं वराननम् ॥

॥ओम् फलपुष्प रसोद्भूतं सर्वतेजो विवर्धनम्। सर्वपुष्टिकरं देवं मधुस्नानं मयार्पितम् ॥

- एक पात्र में किसी पवित्र हवन का भस्म तथा शान्ति जल मिलाकर कुशा से मूर्तियों पर छिड़कें –

॥ओम् वह्निस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत्। तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विधास्यति॥

- एक पात्र में पंचामृत [गोदूध, दही, घी, शहद, चीनी) तथा शान्ति जल लेकर छिड़कें–

॥ओम् शर्करा च समायुक्तं पयो दधि घृतं मधु। एतत् पंचामृतैर्दिव्यैः स्नापयामि सुखाप्तये॥

- एक पात्र में चंदन तथा शान्ति जल मिलाकर छिड़कें।

॥ ओम् नमो देवाधिदेवाय गुणानां वृत्तिदाय च। गन्धतोयैः स्नापयाम्यत्र त्राहिमां परमेश्वर ॥

- एक पात्र में सुगन्धित जल (गुलाब या केवड़ा आदि का जल) लेकर उसमें छोड़ा सा शान्ति जल मिलाकर छिड़कें।

॥ओम् नमस्ते देव देवेश नमस्ते दैत्यसूदन। सर्व गन्ध समायुक्तैर्वारिभिः स्नापयाम्यहम् ॥

इसी तरह १-१ पात्र में निम्नलिखित वस्तुएं लेता जाय, उसमें थोड़ा सा शान्ति जल मिलाकर मूर्तियों पर छिड़के, क्रम इस प्रकार है:–

- आठ फलों को धोकर जल ले तथा शान्ति जल मिलाकर स्नान करायें:–

॥ओम् पूगनारंग जम्बीर कदलीबीजपूरकैः। चूत जम्बूक कदम्बैश्च सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥

- एक पात्र में सुवर्ण धोकर जल लें, शान्ति जल मिलाकर स्नान करायें:–

॥ओम् पीतैः सुवर्ण खण्डैश्च जनितैर्भूमितः सदा। सुवारि कलशस्थैश्च तं देवं स्नापयाम्यहम्॥

- पंचरत्न धोकर जल ले तथा शान्ति जल मिलाकर नहलाए।

॥ ओम सुवर्णम् रजतं मुक्तां लाजावर्त प्रवालकम्। एतत् पंचकरत्नैस्तु सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥

- अलंकार जल-शान्ति जल से–

॥ ओम् शुद्धेन जलेन त्वां भूषणैः समलंकृतम। स्नापयामि सुरेशं तं कल्याण हित काम्यया ॥

- नदी संगम जल तथा शान्ति जल से–

॥ ओम् गंगा सरस्वती चैव यमुनादि नदी स्तथा। तासामद्भिः स्नापयाम्यत्र सर्व सौन्दर्य लब्धये ॥

- गंधोदक (चंदन मिश्रित जल) तथा शान्ति जल से–

॥ ओम् शुद्धैर्मनोहरैः दिव्यैर्गन्धादि सहितैर्जलैः। स्नापयामि प्रसन्नार्थ माशु सिद्धकराय ते ॥

- एक पात्र में गौ की सींग धोकर जल लें, शान्ति जल मिलाकर स्नान करायें।

॥ ओम् सुरभिर्लोक जननी जामदग्न्यभि रक्षिता। तस्याश्शृंगोदके नैव स्नापयामि सुरेश्वर ॥

- एक पात्र में दूर्वा तथा शान्ति जल लेकर स्नान करायें।

॥ओम् दूर्वाङ्कुरैः सुहरितैः स्वच्छैर्गङ्गादिसम्भवैः। जलैः स्नापयामीह देवं यानादि कर्मदम् ॥

- एक पात्र में सप्तधान्य [गेहूँ, जवा, चना, मूँग, सांवाँ, ककुनी, तिल] तथा शान्ति जल लेकर स्नान कराएँ।

॥ ओम् सुक्षेत्रोद्भव शुद्धैश्च प्राणिनां पालकैः सदा। धान्ययुक्तैर्जलैर्देवैः स्नापयामि सुखाप्तये ॥

- पंचपल्लव (पीपल, गूलर, बरगद, पापड़, आम की पत्ती) तथा शान्ति जल से स्नान कराए।

॥ ओम् अश्वत्थोदुम्वर वटप्लक्षचूतैः शुभैः सदा। एतेषां पल्लव युतैर्वारिभिः देवं स्नापयाम्यहम् ॥

- सर्वोषधि [कूट, जटामासी, हलदी, दारु हरदी, मुर्रा, शिलाजीत, चंदन, वच, चम्पक, नागरमोथा–इसके अभाव में सतावर] तथा शान्तिजल मिलाकर स्नान कराये।

॥ ओम् हिमाचलादिर्जनितैर्मुरा चम्पादिभिः शुभैः। सर्वौषधियुतजलैः स्नापयामि सुरेश्वर ॥

- एक पात्र के ऊपर आटा चालन की चलनी रखें, चलनी में जल छोड़े, जिस पात्र में चलनी का जल गिरे, उस जल में शान्ति जल मिलाकर स्नान कराये।

॥ ओम् देव देवं पर शान्तं विश्वस्या घोघ नाशनम्। सहस्रछिद्रजलेनैव स्नापयामि शुभाप्तये ॥

- समुद्र जल तथा शान्ति जल से [समुद्र जल के अभाव में खारा कुआँ का जल] स्नान कराये।

॥ ओम् क्षीरोदाब्धेः समानीतैः क्षारेण लवणेन वा। युतैर्जलैः स्नापयाम्यत्र देवसन्तुष्टिकारकैः ॥

- ईखरस तथा शान्ति जल से–

॥ ओमृ सुक्षेत्रजै रिक्षुदण्डैः सुमिष्टैः पेषितैः रसैः। सुतेजस्कं मूर्तिमयं देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥

- ईखरस में अदरख छोड़कर तथा शान्ति जल से—

॥ ओम् खर्जूरानारिकेलाद्यैः मोदकैः सुष्ठुगन्धकैः। सुरोदकैरीदृशैस्तैः देवं स्नापयाम्यहम् ॥

- स्वादिष्ट [मीठा जल] जल तथा शान्ति जल से—

॥ ओम् यूथिका पाटलाद्यैश्च सम्भूतैः स्वादु वारिभिः। स्नापयामि महाराजं सर्वविश्वस्य पालकम् ॥

- एक पात्र में फूलों को धोकर जल से तथा शान्ति जल मिलाकर स्नान करायें।

॥ ओम कुन्दादि यूथिका पुष्पैः सहितेन जलेन च। कुम्भेन स्नापयामीह देवं सर्वार्थ साधकम् ॥

- रुद्र कलश का जल [ईशानकोण में जो रुद्र कलश रखा है उसका जल] तथा शान्ति जल से —

॥ ओम् ग्रहादि याग सिद्धेन रुद्राद्याधिष्ठितेन च। तच्छान्ति कलशस्थेन जलेन स्नापयाम्यहम् ॥

- नदियों का जल तथा शान्ति जल से—

॥ ओम् समुद्रगानदीनां च वारिभिः कुम्भसंस्थितैः। सुतेजस्कं कृपाभावं सर्व रश्मिभि राकुलम् ॥

स्नापयामि शुभानन्दं भक्ताभीष्टामयप्रदम्। कार्यकारण कर्तारं तं नमामि शुभाप्तये ॥

- इत्र तथा शान्ति जल से—

॥ ओम् प्रधानाया प्रमेयाय कार्याय करणाय च। जलैमृगमदैर्युक्तैः स्नापयामि स्वकाम्यया ॥

- गुलाव जल आदि से—

॥१॥ ओम् नमो देवतनाथाय पुरुषेच्छा कराय च। गंध संभार संयुक्तं जलं दास्यामि यत्नतः ॥

- शुद्ध जल से स्नान करायें। मूर्तियों को जल से साफ कर दें—

॥ ओम् पवित्र कारिभिः शुद्धैः शीतलैः सुमनोहरैः। एवं मूर्तेर्जलैर्देवं स्नापयामि सुरार्चितम् ॥

॥ शुद्धेन वारिणा देवं सकलं वाञ्छित प्रदम्। स्नापयामि सुरेशान मैश्वर्स्याभि वृद्धये ॥

॥ देव देव नमस्तुभ्यं पाहि मां वरदर्षभ। स्नानं शुद्धौदके नैव कुरू त्वं वै निजेच्छया ॥

॥ शुद्धैर्जलैः स्नापयामि त्रिदशं सर्वनायकम्। सर्व विघ्नहरं शान्तं सर्व कल्मष नाशनम् ॥

- एक शुद्ध नवीन वस्त्र से मूर्तियों को पोछ दें—

॥ ओम् तन्तु सन्तान सन्नद्धैः शुक्लैः रक्तैस्तु पीतकैः। प्रतिमाजल विन्दूँस्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः ॥

- मूर्तियों के हाथ में बंधा कंकण खोल दें—

॥ ओम् मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाथकम-ज्ञात यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह, यदि वैतदेन तस्या इन्द्राग्नी प्रभु मुक्त मेनम् ॥

॥ प्राण प्रतिष्ठा ॥

- कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें।
  ॥ ओम् शुभ पुण्य तिथौः...गोत्रः...नामाऽहम् आसु मूर्त्तिषु अवघातादि दोष परिहार्थम्
  अग्नि उत्तारणं देवता सान्निद्ध्यर्थम् प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये ॥
- हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने पृथिवी पर छोड़ दें।
- मूर्त्तियों में घृत लगा दें। मूर्त्तियों के ऊपर जल धारा दें—।
  ॥ ओम् समुद्रस्य त्वाऽवक याग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ँ शिवो भव।
  ॥ ओम् हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ँ शिवो भव।
  ॥ ओम् अपा मिदं न्य यन ँ समुद्रस्य निवेशनम्।
  अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं ँ शिवो भव।

॥ ओम् नमस्ते हरषे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे अन्याँस्ते अस्मत्
तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवो भव ॥

॥ ओम् य प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवो भव।

- एक फूल लेकर मूर्त्तियों का स्पर्श कर ले—
  ॥१॥ ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः आसु मूर्त्तिषु प्राण इह प्राणाः।
  ॥२॥ ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः आसु मूर्त्तिषु सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनःत्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा प्राण पारित पाद पायूप स्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।
  ॥३॥ ओम् आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः आसु मूर्त्तिषु जीव इह स्थितः।
  ॥४॥ ओम् अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
  अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेतु च कस्वन् ॥
- फूल मूर्त्तियों के आगे पृथिवी पर रख दें।
- दूसरा फल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से स्थापना करें—
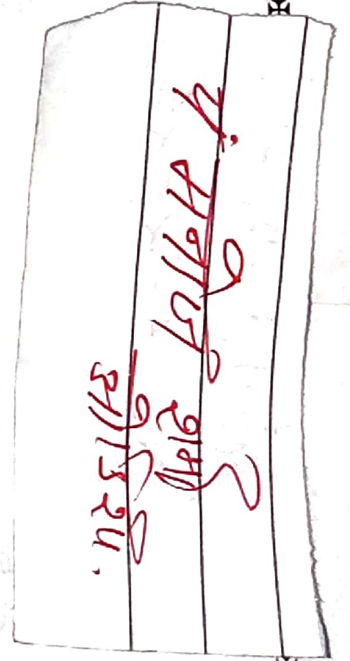
॥१॥ ओम् अयम्पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपा ꣳ शुरुपा ꣳ शोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वशिष्ठ ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया प्राणं गृहणामि प्रजाभ्यः।।

॥२॥ ओम् अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्व कर्मणम् ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुव् ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारा दन्तर्यामोऽन्तर्यामात् पञ्चदशः पञ्चदशाद् वृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया मनो गृहणामि प्रजाभ्यः।।

॥३॥ ओम् अयम्पश्चाद् विश्व व्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्व व्यच सं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्याऋक्‌ सम मृक् समाच्छु क्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशाद् वैरूपं जमदग्नि ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुर् गृहणामि प्रजाभ्यः॥

॥४॥ ओम् इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्र ꣳ सौव ꣳ शरच्छौत्र्य नुष्टुप् शारद्य नुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एक वि ꣳ श एक वि ꣳ शाद् वैराजम् विश्वामित्र ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृहणामि प्रजाभ्यः ॥

॥५॥ ओम् इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या हेमन्तो वाच्यः पंक्तिर् हैमन्ती पंक्त्यै निधनव न्निधनवत आग्रयण आग्रयणात् त्रिणव त्रयस्त्रि ꣳ औ त्रिणव त्रयस्त्रि ꣳ शाभ्या ꣳ शाक्वर रैवते विश्वकर्म ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया वाच गृहणामि प्रजाभ्यः ॥
ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवान्।
यत्त्वेमहे प्रतिपन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

॥६॥ ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

- फूल मूर्ति पर चढ़ा दें।
- मूर्तियों को शुद्ध स्थान पर विठाकर उनकी षोडशोपचार पूजा करें–

॥ षोडशोपचार पूजन ॥

॥१॥ फूल लेकर आवाहन–

ओम् सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात। स भूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वाऽत्य तिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥

॥२॥ फूल लेकर आसन—

ओम् पुरुष एवेद १७ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उता मृत्व स्येशानो यदन्ने नातिरोहति ॥

॥३॥ पाद्य-जल छोड़ें—

ओम् एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥

॥४॥ अर्घ्य-जल छोड़ें—

ओम् त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशना नशने अभि ॥

॥५॥ आचमन-जल छोड़े—

ओम् ततो विराड जायत विराजो अधिपुरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मयोपुरः ॥

॥६॥ स्नान-जल छोड़ें—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नाराण्या ग्राम्याश्च ये ॥

॥७॥ पंचामृत स्नान—

ओम् पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे भवत् सरित् ॥

॥८॥ शुद्ध जल स्नान—

ओम् शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः।

श्येता क्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाया मा अवलिप्ता रौद्र नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

- वस्त्र चढ़ाएं—

ओम् तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दा १७ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मा दजायत।

- दो वार जल छोड़ दें— **ओम् वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।**

- यज्ञोपवीत—

ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्य मग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

- २ बार जल छोड़ें— **ओम् उपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

- चन्दन—

ओम् त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्वृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्माद मुच्यत ॥

- अक्षत—

ओम् अक्षन्नमी मदन्त ह्यव प्रिय अधूषत।
अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्ठया मती यो जान्विन्द्रते हरी॥

टिप्पणी—हनुमान तथा शालिग्राम की मूर्ति पर अक्षत नहीं चढ़ाए—भूमि पर छोड़ दे।

- माला फूल—

ओम् औषधीः प्रतिमोद दध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव स जित्व रीर्वीरुधः पार यिष्णवः॥

- इत्र—

ओम् अहिरिव भोगैः पर्येति वाहुञ्ज्याया हेतिम्परि वाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमा १७ सि परिपातु विश्वतः ॥

- आभूषण—

(१) **ओम् स्वर्णधर्मः स्वाहा, स्वर्णार्कः स्वाहा, स्वर्ण शुक्रः स्वाहा, स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा, स्वर्ण सूर्यः स्वाहा।**
(२) **नाना विधानि दिव्यानि नानारत्नोज्वलानि च। देहालंकरणार्थाय भूषणानि-अर्पयाम्यहम् ॥**

- धूप—

ओम् धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योस्मान् धूर्व तितं धूर्वयं वयनूधूर्वामः।
देवानामसि वह्नितम १७ सस्नि तमं पप्रित मञ्जुष्ट तमन्देव हूतमम् ॥

- दीप—

ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत ॥

- हाथ धोकर—नैवेद्य—

(१) **ओम् नाभ्याआसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णोर् द्यौः समवर्तत।**
पद्‌भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान्-अकल्पयन् ॥

(२) **शर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीरं घृतादिभिः। आहारैर्भक्ष्य भोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥**

- तीन बार जल छोड़ें—

ओम् नैवेद्यान्ते पानीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि ॥

ओम् एलो शीर लवंगादि कर्पूर परिवासितम्। प्राशनार्थम् कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥

- ऋतु फल—

ओम् या फनिनीर्या अफला अपुष्या याश्च पुष्पिणीः वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व१७ ह सः ॥

- दोनों हाथ की अनामिका (तीसरी अँगुली—जिसमें पैती पहनी है) में चन्दन लगा कर— अंगूठे के सहारे प्रतिमा पर उस चन्दन को छिड़क दें—मन्त्र पढ़ें—

ओम् करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं कुंकुमान्वितम्। करोद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- पान -सुपारी

ओम् उतस्मास्य द्रवतस्तु रण्यतः पर्णन्नवे रनुवाति प्रगर्धिनः।

श्येनस्येव ध्रजतो अङ्क सम्परि दधिक्राव्णः सहोर्जा त रित्रतः स्वाहा ॥

- दक्षिणाद्रव्य—

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

सदाधार पृथ्वीन्द्यामुते माम् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

- मन्त्र पुष्पांजलि—फूल लेकर हाथ जोड़ लें। मन्त्र पढ़कर फूल चढ़ा दें—

ओम् यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।

तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥

- प्रदक्षिणा—हाथ घुमा कर प्रदक्षिणा करे—

ओम् सप्ता स्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः देवा यज्ञन्तन्वानाअबन्ध्नन्पुरुषं पशुम् ॥

- जल छोड़ें—

॥ अनेन पूजनेन देवः प्रीयतां न मम ॥

- प्रार्थना करें। [जो मूर्तियाँ हो उनकी प्रार्थना करे।]

॥ रथ यात्रा ॥

- षोडशोपचार पूजन के बाद मूर्त्तियों को अलंकार, मुकुट आदि पहना कर सजा दें।
- इसके बाद फूल लेकर प्रार्थना करें—

॥ओम् उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश उत्तिष्ठ जगतांपते। उत्तिष्ठ सर्वभूतेश त्रैलोक्ये मंगलं कुरु॥

- फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़े दें।
- सभी मूर्तियों को उठाकर रथ पर स्थापित करें।

॥ओम् चतुष्चक्रयुतं दिव्यं देवानां वल्लभं परम्। रथमारूह्य देवेश यात्रां कुरू परमेश्वर॥

- शंख-भेरी-मृदंग आदि बजाते हुए कीर्तन-मंगल गीतों के साथ नगर-ग्राम मंडल की परिक्रमा करायें।
- परिक्रमा के बाद मूर्त्तियों को मन्दिर में लाकर स्थित करें।

टिप्पणी—कुछ लोग शंकर-हनुमान जी की प्रतिष्ठा में उपनयन संस्कार की तरह यज्ञोपवीत पहनाते हैं और भीखी डालते हैं (यह लोकाचार है)।

॥ शिव पार्वती विवाह ॥

[लोकाचार में यहीं पर शंकर-पार्वती का विवाह पौपुजी आदि करते हैं]

- मूर्ति परिक्रमा के बाद मण्डप में लाकर रखें।
- शंकर-पार्वती मूर्ति बगल-बगल पश्चिम मुख रख दें। [पार्वती की मूर्ति शिवलिंग के दाहिने रहेगी]।
- यजमान मूर्तियों के सामने पूर्व मुख बैठ जाय।
- यजमान आचमन-प्राणायाम करें।
- यजमान हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करें।

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ....गोत्रः...नामाऽहम् अस्मिन शिवादि मूर्त्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् शिव-पार्वती विवाहाख्यं कर्म करिष्ये ॥

- हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।

- हाथ में अक्षत-जल लेकर फिर संकल्प करें।

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ....गोत्रः.....नामाऽहम् अस्मिन् प्रतिष्ठा कर्मणि देवानां मधुपर्केण अर्चयिष्ये ॥

- हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।
- यजमान एक कुश लेकर विष्टर दें–

॥ कुश विनिर्मिते दिव्ये भक्ति भाव समन्विते। देवाः स्वात्म स्वरूपा भो तिष्ठन्तां विष्टरे शुभे ॥

- कुशा मूर्तियों के चरणों के पास रख दें।
- एक पात्र में गन्ध-पुष्प-दूर्वा-जल लेकर पाद्य दें।

॥ ओम् देव देव नमस्तुभ्यं लोकानुग्रहकारक। पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥

॥ ओम् पाद्यं प्रतिगृह्णन्तु ॥

- पात्र का जल मूर्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दें।
- पात्र में रखे दूर्वा से पात्र का जल शंकर जी के पाँव पर छिड़क दे।

- एक दूसरे पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दें।

॥ ओम् व्यक्ताव्यक्त स्वरूपाय भक्ताभीष्ट प्रदायिने। इदमर्घ्यम् मयादत्तं गृहणीष्वा मर वल्लभ ॥

॥ ओम् अर्घ्यम् प्रतिगृह्णन्तु ॥

- अर्घ्य पात्र मूर्तियों के सामने भूमि पर रख दें। थोड़ा सा जल मूर्ति के पास गिरा दें।
- एक पात्र में जल लेकर आचमन दें–

॥ ओम् मन्दाकिन्यादि सम्भूतैर्जलैः शुद्धैः शुभावहैः। सम्यगा चम्यतां देव भक्ता भीष्ट प्रदायक ॥

- आचमन पात्र मूर्ति के सामने रख दें। थोड़ा सा शिवलिंग के पास गिरा दें।
- एक पात्र में दही-शहद-घी रखकर मधुपर्क दें–

॥ दधि मध्वाज्य संयुक्तं दिव्यं मंगल दायकम्। मधुपर्कम् गृहाणेश सर्वदा मधु पर्कय ॥

- मधुपर्क-पात्र मूर्तियों के समक्ष रख दें।

[इसके बाद वस्त्र-यज्ञोपवीत-गन्ध-माला फूल-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा आदि चढ़ाकर यथासम्भव पूजा कर दे।]

||गोदान||

- कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर एक गोदान करें—

|| अद्य शुभ पुण्य तिथौ....गोत्रः...नामाऽहम् शुभता सिद्धयर्थम् मधुपर्क पूजन प्रतिष्ठार्थम् च तदंगत्वेन गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं सांगता सहितं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ||

- ब्राह्मण को गोदान दे दें।
- दोनों मूर्तियों के बीच एक पीला कपड़ा लगा दें [अंतः पट करें] मंगल श्लोकों का पाठ करें।

|| योगं योगविदां विधूत विविध व्यासङ्ग शुद्धाशय।
प्रादुर्भूत सुधारस प्रसृमर ध्यानास्पदा ध्यानिनाम् ||
आनन्द प्लव मानबोध मधुरा मोदच्छटा मेदुरम्।
तं भूमान मुपास्महे परिणतं दन्ता वलास्यात्मना ||१||
उद्यद् दिनेश्वर रूचि निजहस्त पद्मैः। पाशाङ् कुशाभयवरान् दधतं गजास्यम्।
रक्ताम्वरं सकल दुःख हरं गणेशम्। ध्यायेत् प्रसन्न मखिला भरणाभिरामम् ||२||

ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ् तरंग भंग्या। सृष्टि स्थिति प्रलय कारणतां व्रजन्ति।
लावण्य वारि निधि वीचि परिप्लुतायै। तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायै ||३||

- यजमान मूर्तियों के सामने कन्यादान-पौपुजी के लिए एक नई परात तथा एक गेडुआ-जल पात्र रखें।
- यजमान दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर शिवजी की प्रार्थना करें [गोत्र आदि का स्मरण करें]—

|| ओम् अरुपोऽयं परब्रह्म निर्गुणः प्रकृतेः परः। निराकारो निर्विकारो मायाधीशः परात् परः ||
अगोत्र कुल नामाहि स्वतंत्रो भक्त वत्सलः। तदिच्छया हि सगुणस् सुतनुर्वहु नामभृत ||
सुगोत्री गोत्रहीनश्च कुलहीनः कुलीनकः। नो जानाति शिवं कोऽपि महायोगेश्वरं हरम् ||
सगुणस्य महेशस्य लीलया रूप धारिणः। गोत्रं कुलं वि जानीह नादमेवहि केवलम् ||
शिवा नादमयं सत्यं नादशिव मयस्तथा। उभयोरन्तरं नास्ति नादस्य च शिवस्य च।
यस्याज्ञया जगदिदं च विशालमेव, जातं परात् परतरो निज बोधरूपः।
शर्वः स्वतंत्र गतिकृत परभाव गम्यस्, सोऽसौ त्रिलोक परिरद्य च नः सुदृष्टः।

- हाथ का अक्षत फूल शिवलिंग के पास छोड़ दे।

- शंकर-पार्वती के बीच का पीला कपड़ा (अन्तः पट) हटा दे।
- नवीन पीले वस्त्र से शंकर पार्वती की गाँठ बाँध दे।
- यजमान दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर कन्यादान करे।
- यजमान की पत्नी संकल्प पढ़ने तक पति के हाथ में जल की धारा देती रहे।
- जल पौपूजी के परात में गिरना चाहिये–

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ...गोत्रः....नामाऽहम् सपत्नीकोऽहम् च शिवादि मूर्त्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि जगद्दुधार हेतवे तथा चास्माकं समस्त पितृणाम् निरति शयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये उमामहेश्वर प्रीत्यर्थम् च यथाशक्ति सुपूजिताम् कन्यास्वरूपिणीं गौरीं त्रैलोक्य नाथाय महेश्वराय पुरुष संयोग प्रधान गुण कारिणे जगद् व्यापिने भार्यार्थिने शिवाय सादरं समर्पयामि ॥

- हाथ का अक्षत-फूल-जल थाल में छोड़ दे।
- फूल लेकर प्रार्थना करें–

**॥ ओम् इमां गौरीं तुभ्य महं ददामि परमेश्वर। भार्यार्थे परिगृह्णीष्व प्रसीद सकलेश्वर ॥
कालं गमय कालेश गौरी संश्लेष पूर्वकम्। विश्लेषस्तेन भविता सर्वकालं तवाश्रिता ॥
प्राप्ता गौरी महादेवा धुना प्राणधिका प्रिया। दृष्ट्वा प्रियास्यत्र चन्द्राभं त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥
कृपानिधे कृपां कृत्वा जनान् सम्पालयिष्यसि। सहस्र दोषं चास्माकं क्षम्यतां परमेश्वर ॥**

टिप्पणी–१. कुल लोग कुशा से ग्रन्थि बन्धन करते हैं।
२. कुछ लोग कच्चे सूत की माला बनाकर दोनों को पहनाते हैं।
३. शिव पुराण में ग्रन्थि बन्धन के बाद कन्यादान हिमालय ने किया है ऐसा लिखा है तदनुसार ग्रन्थि बन्धन पहले लिखा गया है।

- फूल शिवलिंग पर चढ़ा दें।
- दूसरा फूल लेकर पार्वती की प्रार्थना करें–

**॥ जगदम्बा महेशी त्वं शिवः साक्षात् पतिस्तव। तवस्मरणात् नार्यो भवन्ति हि पतिव्रताः ॥
प्रसीदत्वं महेशानि प्रसीद जगदम्बिके। प्रसीद देवि देवेशि मद् गृहे मंगलं कुरु ॥**

- फूल पार्वती जी पर चढ़ा दें।
- यजमान तथा यजमान-पत्नी शंकर पार्वती की पाद पूजा (पौपुजी) करें।
- सोना-चांदी-द्रव्य आदि लेकर संकल्प करें।

॥अद्य शुभ पुण्यतिथौ...गोत्रः...नामाऽहम् उमा महेश्वर प्रीत्यर्थम् इदं सुवर्ण् [रजतम्-द्रव्यम्] दातु महमुत्सृजे ॥

- ब्राह्मणगण निम्न मन्त्रों का पाठ करें–

॥ ओम् कोदात् कस्माऽअदात कामोदात् कामायादात्। कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥

- इसी तरह कुटुम्बी जल तथा नगर-ग्राम के व्यक्ति भी पौपुजी करें।

॥ पौपुजी के बाद लाजाहुति ॥

- शिव पुराण के अनुसार शंकर-पार्वती के विवाह में मैनाक ने लावा परछा था। देवपत्नियाँ शिव-पार्वती को कोहवर में ले जाकर हास-परिहास किया था।
- पार्वती की माता ने परछन किया था। आज भी लोकाचार में यह सब होता है अतः देशाचार के अनुसार करें-कराएं।

॥ शय्याधिवास ॥

- मण्डप में नवग्रह तथा सर्वतोभद्र पीठ के बीच की भूमि पर १ शय्या बिछा दे।
- शय्या के नीचे सप्तधान्य छोड़ दें। शय्या पर चंदवा (चाँदनी) बाँध दें (शय्या का सिरहाना पूर्व की ओर रखें)
- शय्या पर ओढ़ने-बिछाने के लिए सुन्दर बिस्तर लगा दें।
- शय्या के समीप छड़ी-छाता, पंखा, दीपक रखने के लिए दीवट, फल-फूल-मिठाई आदि भोजन-सामग्री, मेवा जलपात्र रखें।
- शय्या के समीप शीशा, आसन तथा गृहस्थी का सामान रख दें।
- यजमान शय्या के दक्षिण उत्तर की मुख करके बैठें।
- शय्या के ऊपर सफेद चावल से स्वास्तिक बना दें।
- स्वास्तिक के ऊपर १ कुशा रख दें (कुशा का अग्रभाग पूर्व की ओर रहे)।
- यजमान आचमन प्राणायाम करें। भगवान का ध्यान करें–

॥ ओम् शान्ता कारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्। विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैकनायम् ॥

- कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें।

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ [अनुक] गोत्रः [अमुक] नामाऽहम् करिष्यमाण देवप्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्धयर्थम आसु मूर्त्तिषु [अस्मिन्मूर्त्तौ] देवकला सान्निद्ध्यार्थम् च शय्याधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥

- कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दें।
- शय्या पर जल-चन्दन-अक्षत-फूल आदि पर चढ़ाकर शय्या की पूजा कर दें।
- यजमान [सपत्नीक] उठकर शय्या की परिक्रमा करें।

॥ ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तरि कृतानि च। तानि त्वया विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे ॥

- शंख भेरी-मृदंग-घंटा-घड़ियाल बजाकर मूर्तियों को शय्या पर लिटा दे [मूर्तियों का सिर पूर्व की ओर रहे]।

॥ ओम् नमोऽस्तु ते ब्रह्मरूपाय सर्व कार्य प्रसाधक। वेदिको परिशय्यायां स्थिरोभव नमोऽस्तुते ॥

- मूर्तियों को वस्त्र से ढँक दें।

॥ ओम् सर्ववर्ण प्रदेदेव वाससी ते विनर्मिते। ददामि प्रीतये तुभ्यं देव-देव नमोऽस्तुते ॥

- फूल लेकर देवों को शयन करा दें।

॥ ओम् देव-देव जगद् व्यापिन पर्यङ्के वै सिते शुभे। सितवस्त्र समाच्छन्ने सोपधाने सुषुप्स्व हि ॥

॥ सुप्ते त्वपि देवदेवेश जगत् सुप्तं भवेदिदम्। विबुध्ये त्वं विबुध्येत् जगत् सर्वम् चराचरम् ॥

- फूल मूर्ति के चरणों के पास छोड़ दें।
- मूर्तियों के पास बैठकर सूक्त पाठ-मंगल गान करें।

॥ प्रासाद-शिखर कलश पूजन ॥

- यजमान मूर्तियों के पास से उठकर पूजा सामग्री के साथ मन्दिर में आए जहाँ मूर्तियों को स्थापित करना है।
- यजमानः पूर्व अथवा उत्तर मुख बैठ जाय।
- आचमन-प्राणायाम कर लें।

अपने सामने किसी पीढ़ा या पत्तल पर शिखर कलश रख ले।

[मन्दिर के ऊपर जो गुम्वजनुमा पीतल आदि का कलश-त्रिशूल-चक्र आदि लगाया जाता है उसे शिखर कलश कहते हैं]।

[यदि पहले से शिखर कलश लगा दिया जाता है तो मन्दिर के बाहर आकर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़कर उसकी पूजा कर दें। यदि शिखर कलश लगा नहीं है तो उसे अपने सामने रखे।

- जिन शान्ति कलश जल आदि से मूर्तियों को स्नान कराया है उसी जल से शिखर कलश को भी स्नान करा दें [आम्रपल्लव या कुशा से कलशों का जल छिड़क दें]।
- शिखर कलश के साथ ही मन्दिर में भी चारों ओर इन कलशों का जल छिड़कें।
- जहाँ मूर्ति स्थापित करनी है वहाँ भी इन कलशों का जल छिड़कें। मन्त्र—

॥ ओम् इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं च यत्। यच्चाभि दुद्रोहा नृतं यच्च शेषे अभीरूणम् ॥

॥ ओम् आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु। दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देच यन्याचै यद्वो-शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्त छुन्धामि ॥

- शुद्ध जल से शिखर कलश को स्नान करा दें। • मन्दिर में चारों ओर छिड़क दें।
- गन्ध-पुष्प आदि से शिखर-मन्दिर की पूजा कर दें। • फूल लेकर प्रार्थना करें—

॥ ओम् हीम् सर्व देव मया चिन्त्य सर्व रत्नो ज्वलाकृते। यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव ॥

- फूल शिखर कलश पर छोड़ दें।
- शिखर कलश उठाकर ऊपर लगाने के लिए शिल्पी को दे दें।

॥ पिण्डिका पूजन ॥

- जहाँ मूर्तियों को स्थापित करना है उस स्थान की पूजा कर दे।
- शिवलिंग स्थापित करने में जहाँ जलहरी बनानी है, उस स्थान की पूजा होती है।
- अन्य देवताओं (प्रतिमा) को जहाँ स्थापित करना है उस स्थान की पूजा करें।
- एक पात्र में गन्ध-पुष्प-कुश लेकर निम्न मंत्र पढ़े—

॥ ओम् महाँ इन्द्रो वज्र हस्तः षोडशी शर्म यच्छतु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर् महेन्द्राय त्वा ॥

- पात्र का गन्ध-पुष्प उन स्थानों पर थोड़ा-थोड़ा डाल दें।
- प्रधान मूर्तियों के स्थान पर पँचरत्नी-चाँदी का कछुआ उसी गर्त में छोड़ दें।
- फूल लेकर प्रार्थना करें—

॥ ओम् त्वमेव परमाशक्तिः त्वमेवासन धारिका। देवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्य मिह सर्वदा ॥

- फूल वहीं पर छोड़ दें।
- जलहरी अथवा शिला पट उसी स्थान पर स्थिर कर दें।

टिप्पणी—जलहरी का मुख उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिए।

- इसी तरह स्थापित होने वाली सभी मूर्तियों के स्थान की पूजा कर दें।
- फूल लेकर प्रार्थना कर लें—

॥ आसन शक्तिभ्यो नमः॥ पिण्डिकाया माधारशक्त्यै नमः ॥

॥ सर्व देव मयो शानि त्रैलोक्याह्लाद कारिणी। त्वां प्रतिष्ठयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते॥

॥ यावच् चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेष वसुन्धरा। तावत् त्वं देव देवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिरा भव ॥

॥ पुत्रा नायुष्मतो लक्ष्मी मचला मजरा मृताम्। अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुनित्यं विधेहि मे ॥

॥ विजयं नृपतेः सर्वम् लोकानां क्षेम मेव च। सुभिक्षं सर्वलोकानां कुरु देव नमोऽस्तुते ॥

॥ मूर्ति स्थापन ॥

- यजमान पिण्डिका के समीप से उठकर मूर्तियों के समीप आकर पूर्व अथवा उत्तर मुख बैठे।
- आचमन-प्राणायाम करें। शान्ति पाठ करें।
- फूल लेकर प्रार्थना करें [जिस देवता की मूर्ति हो उसकी प्रार्थना करनी चाहिए।]

कुछ प्रार्थना नीचे दी जा रही है।

शिवलिंग **॥ ओम् प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते।**
नील ग्रीव सुराधीश प्रबुद्ध शशि शेखर ॥ प्रबुद्ध पार्वती कान्त पंचवक्त्र नमोऽस्तुते ॥

कृष्ण-विष्णु || **ओम् प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते।**
मेघ श्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षणे || प्रबुद्ध भूधरा नन्त वासुदेव नमोऽस्तुते ||

दुर्गाजी || **ओम् प्रबुध्यस्व महामाये देवि दुर्गे शुभप्रदे। स्थापनं ते करिष्यामि प्रसन्ना भव मे सदा||**

अन्य देवों में || **ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस् त्वे महे।**
उप प्रयन्तु मरूतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ||

- मूर्तियों को उठा कर प्रासाद में लाए, पिण्डिका के पास शुद्ध आसन पर रखें।
- जिस मूर्ति को जहाँ स्थापित करना हो उस स्थान के पास रखें [शिवलिंग को जलहरी के पास रखें]।
- फूल लेकर मंत्र पढ़ें—

|| ओम् ईश्वरं भावयन् प्रतिष्ठितः परमेश्वरः ||

प्रधान पुरुषो यावच्चन्द्र दिवाकरौ। तावत्त्वमनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरोभव ||

- फूल मूर्तियों पर चढ़ा दें। शिवलिंग को अर्घा [जलहरी] में स्थापित करें।
- अन्य मूर्तियों को यथास्थान स्थापित करें। स्थापना के समय ब्राह्मण निम्न मंत्र पढ़ें—

|| ओम् ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन् नायतने प्रजया पशुभिर् भूयात् ||
घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथा मिन्द्रस्यछदिरसि विश्व जनस्यछाया ||
|| ओम् स्थिरो भव शाश्वतो भव ||

- स्थापित करके बालू सीमेन्ट आदि से शिवलिंग एवं मूर्तियों को सुदृढ़ कर दें।
- फूल लेकर प्रार्थना करें—

|| ओम् लोकानुग्रह देत्वर्थम् स्थिरोभव सुखाय नः। सानिध्यं कुरुं देवेश प्रत्यक्षं परिपालय ||

|| प्रतिष्ठा करें ||

- यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर कहे—

|| ओम् अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुदा ऋषयः ऋजु यजुः सामानि
छंदासि क्रियामय वपुः प्राणाख्यो देवता देवस्य प्राण प्रतिष्ठायां विनियोगः ||

- हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दें—

● एक फूल लेकर मूर्त्तियों का स्पर्श करें। मंत्र पढ़े–

॥१॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥

॥२॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीम् यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः ॥

॥३॥ ओम् आं ह्रीम् क्रीम् यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्
त्वक् चक्षुष् श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

॥४॥ ओम् आत्वा हार्ष मन्तर भू ध्रुवस् तिष्ठ विचा चलिः।
विशस् त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद् राष्ट्र मधिव भ्रशत् ॥

॥५॥ ओम् अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन् ॥

● हाथ का फूल मूर्त्ति के समीप छोड़ दें। ● दूसरा फूल लेकर प्रार्थना करें–

॥ स्वागतं देवदेवेश मद् भाग्यात् त्व मिहागतः। प्राकृतं त्वम् दृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय ॥
धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थम् स्थिरो भव सुखाय नः।

॥ प्रतिष्ठा के पौराणिक मंत्र ॥

● कुछ लोग मूर्ति के लिए पौराणिक मंत्रों का पाठ करते हैं जो नीचे दिये जा रहे हैं–

शिवलिंग में ॥ ओम् त्र्यक्षं च दशवाहं च चन्द्रार्धकृत शेखरम्।
महायोगेश्वरं देवं स्थापयामि त्रिलोचनम् ॥

कृष्ण ॥ ओम् अतसी पुष्प संकाशं पीतवासं जनार्दनम्।
देवकी तनयं कृष्णं स्थापयामि सुरोत्तमम् ॥

राधा ॥ ओम् कृष्णस्य महिषीं देवीं जगुद्भव कारिणीम्।
संस्थापयामि राधे त्वां वरदा भव शोभने ॥

विष्णु मूर्त्ति ॥ ओम् अतसी पुष्प संकाशं शंख चक्र गदा धरम्।
संस्थापयामि देवेशं विष्णुः भूत्वा जनार्दनम् ॥

लक्ष्मी मूर्त्ति ॥ ओम् विष्णोर्महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम्।
संस्थापयामि लक्ष्मि त्वां वरदा भव शोभने ॥
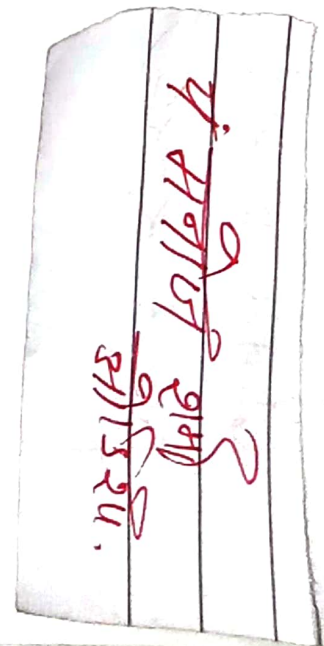
श्रीराम मूर्त्ति || ओम् अतसी पुष्प संकाशं धनु वर्णाधरं विभुम्।
कौशल्यातनयं रामं स्थापयामि रघूत्तमम् ||

सीता मूर्त्ति || ओम् रामस्य महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम्।
संस्थापयामि सीते त्वां वरदा भव शोभने ||

लक्ष्मण मूर्त्ति || ओम् रामस्य दयितो भ्राता लक्ष्मणः शुभलक्षणः ||
संस्थापयामि देव त्वां सुमित्रा नन्द वर्धन ||

भरत मूर्त्ति || ओम् द्विभुजं श्यामलं कान्तं राम सेवा परायणम्।
कैकेयी तनयं देवं भरतं स्थापयाम्यहम् ||

हनुमानजी मूर्त्ति || ओम् रामदूत महावाहो पिङ्गाक्ष कपिनायक।
संस्थापयामि देव त्वां अंजनी हर्षदायक ||

देवी मूर्त्ति || ओम् चिद्रूपिणीं मुनिध्येया लभीप्स वर वाहनाम् ||
दिव्यायुधां महामायां स्थापयामि सुरेश्वरीम् ||

सूर्य मूर्त्ति || ओम् सहस्र किरणं शान्त अप्सरोगण सेवितम् ||
पद्महस्तं महावाणं स्थापयामि दिवाकरम् ||

गणेश मूर्त्ति || ओम् लम्बोदरं चतुर्वाहुं त्रिनेत्रं चारू वाहनम् ||
पाशांकुशाद्या युधाढ्यं च स्थापयामि गजाननम् ||

नन्दी मूर्त्ति || ओम् शिवद्वार गतसुत्वं वै शिव वाहन मुत्तमम् ||
पार्वत्याः प्रीतिकरं देवं नन्दिनं स्थापयाम्यहम् ||

लक्ष्मीनारायण || ओम् आगच्छतां महासत्त्वौ लक्ष्मीनारायाणा विह ||
युवां संस्थापयाम्यत्र भक्त्या मयि प्रसीदताम् ||

पार्वती जी || ओम् हिमालय सुतां रम्यां शिव वामाङ्क संस्थिताम्।
जगद्धात्री मन्त्रपूर्णाम् त्वां गिरिजां स्थापयाम्यहम् ||

- मूर्त्तियों को स्थापित कर यथाविधि सभी की उत्तर पूजा कर दें।
- पुरुष सूक्त से पूजन करना चाहिए। पूजा विधि देखें [वेदी पूजन पद्धति में]।

॥ प्रतिष्ठा होम् ॥

इसके बाद हवन कुंड के पास बैठकर यथाविधि [वेदी पूजन पद्धति से]—

१. अग्निस्थापन
२. अग्नि पूजन
३. ब्राह्मण वरण
४. कुश कण्डिका
५. हवन
६. वलि प्रदान
७. पूर्णाहुति
८. कपूर आरती
६. अभिषेक
१०. गोदान
११. आचार्य दक्षिणा
१२. भूयसीदान
१३. ब्राह्मणभोजन संकल्प
१४. पीठ-शय्या आदि का दान

॥इति प्रतिष्ठा विधि॥